अनुराग
सुसमाचार और नारीत्व – भाग 1
डॉ. डेविड प्लॉट

मेरे साथ कृपया अपनी–अपनी बाइबल में तीतुस अध्याय 2 निकाल लें। हमारे इस अध्ययन का विषय है सुसमाचार और नारीत्व।

ऐसा प्रतीत होता है कि आप सोच रहे हैं, "आपको नारीत्व के विषय में क्या ज्ञान है?" अतः हम तीतुस अध्याय 2 में इस विषय का अध्ययन करेंगे। इसमें युवकों, वयस्कों, युवा महिलाओं और अधिक आयु की महिलाओं के लिए निर्देश हैं। अतः हम तीतुस अध्याय 2 में बाइबल आधारित नारीत्व पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

मैं चाहता हूं कि आप मेरे साथ पद 3 देखें। हम इसी पर चिन्तन करेंगे। हमें बहुत अध्ययन करना है। मैं चाहता हूं कि आप देखें, बाइबल कम आयु और अधिक आयु की महिलाओं के बारे में क्या कहती है। इसके बाद हम अध्याय 2 के अन्त में आ जाएंगे और देखेंगे कि वहां क्या हो रहा है।

तीतुस 2:3 में लिखा है, "इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चालचलन पवित्र लोगों सा हो; वे दोष लगानेवाली और पियक्कड़ नहीं; पर अच्छी बातें सिखानेवाली हों ताकि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चो से प्रीति रखें; और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली और अपने अपने पति के अधीन रहनवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए।" अब तीतुस 2:11 पर आ जाएं, "क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं। और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिस ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी जाति बना ले जो भले भले कामों में सरगर्म हो। पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह, और समझा और सिखाता रहा कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए।"

अब मैं जो करना चाहता हूं वह यह है कि मैं तीतुस 2:3–5 पर आ जाऊं परन्तु हम पद 15 से आरंभ करेंगे। हमें यह समझना आवश्यक है कि बाइबल आधारित स्त्रियों के लिए ये वचन शून्य से नहीं आए हैं।

इनका यहां तीतुस को लिखे पौलुस के पत्र से संदर्भ है। तीतुस कलीसिया का अगुआ था। उसे पौलुस ने निर्देश दिए कि युवा और वृद्ध पुरुषों तथा युवा महिलाओं और वृद्ध महिलाओं का मार्गदर्शन करे।

देखिए पद 15 में वह क्या कहता है, "पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह, और समझा और सिखाता रह।" यहां मैं आपको सचेत करना चाहता हूं। यह हमारे अध्ययन श्रृंखला की कुंजी है। यह मुख्य बात है जब हम वचन पर मनन करते हैं। मैं आपको अध्ययन श्रृंखला के आरंभ में ही चिता देना चाहता हूं।

पहली चितौनीः परमेश्वर का वचन ही प्रचारक का एकमात्र अधिकार स्रोत है। पौलुस कहता है, "पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह।" अर्थात वचन की बातें। आज के हमारे युग में स्त्री और पुरुष परमेश्वर के जनों के सामने खड़े होकर व्यर्थ की बातें करते हैं। उनके प्रचार में परमेश्वर के वचन की बातें तो होती ही नहीं हैं। मेरी चिन्ता है कि कलीसिया में आत्मिक अधिकार और आत्मिक अगुआई है ही नहीं।

मेरे इस कथन पर आप कहेंगे, "आप कैसे सोच सकते हैं कि आपके पास अधिकार है?" जब यह प्रश्न उठा है तो मैं आपको कुछ महत्त्वपूर्ण बातें बताना चाहता हूं।

पहली बात, प्रचारक का अधिकार उसका अपना नहीं होता है। वह उसके अपने व्यक्तित्व पर आधारित नहीं होता है। कुछ लोगों का सोचना है, "यदि प्रचारक ने कहा है तो यह पत्थर की लकीर है। ऐसा ही होना चाहिए।" परन्तु कुछ सोचते हैं कि प्रचारक जो कहता है वह सही नहीं है। यदि आप ऐसा कहेंगे तो मैं इसे स्वीकार करुंगा।

कुछ लोग सोचते हैं और हम जानते भी हैं कि कुछ लोगों का विश्वास मसीह में अवस्थित नहीं है। उनका विश्वास आश्चर्यकर्म करनेवाले प्रचार में होता है जो मसीह के व्यक्तित्व में विश्वास के सर्वथा विपरीत है। प्रचारक का अधिकार उसका अपना नहीं होता है।

दूसरी बात, अधिकार संस्था का भी नहीं होता है। मेरे कहने का अर्थ है कि अनेक संस्थाएं हैं, कलीसियाई वर्ग हैं, उपासना विधियां हैं जिनका धर्मशास्त्र विरोधी दावा है कि कलीसिया की शिक्षा ही अधिकार पूर्ण है और धर्मशास्त्र के अनुसार यही सर्वोचित शिक्षा है।

यह सच नहीं, कदापि नहीं! वचन ही प्रचारक का एकमात्र अधिकार है।

तीसरी बात, प्रचारक का अधिकार उसकी बुद्धि की उपज नहीं है। ऐसे अनेक मनुष्य हैं, अनेक प्रचारक हैं जो सोचते हैं कि उनके अपने विचार, उनकी अपनी धारणाएं उनकी अपनी शिक्षाएं अधिकार–संपन्न हैं। कथित थियोलीजियन, बाइबल ज्ञाता ज्यों ज्यों बुद्धि में विकास करते जाते हैं त्यों त्यों वे परमेश्वर के वचन के संबन्ध में अपनी बुद्धि के घमण्ड में फूलने लगते हैं और परमेश्वर के वचन की आलोचना करने लगते हैं और कहते हैं कि वे वचन के अधीन नहीं हैं। यह मसीही कॉलेजों में अत्यधिक प्रचलित है या कहें मसीही माने जानेवाले कॉलेजों में जहां के मसीही कहलानेवाले प्राध्यापक अपने आप को परमेश्वर के वचन से अधिक ऊंचा समझते हुए उसकी आलोचना करते हैं। ऐसी स्थिति में सच तो यह है कि उनको कोई अधिकार नहीं है, कुछ भी नहीं।

प्रचारकों में भी यही स्वभाव पाया जाता है। यद्यपि वे अपने मुंह से नहीं कहेंगे कि उनके विचार परमेश्वर के विचारों से ऊंचे हैं उनके प्रचार से प्रकट होता है कि उनकी मानसिकता ऐसी है क्योंकि वे वह नहीं कहते जो परमेश्वर वचन में कहता है। वे अपने विचार, अपने मत प्रस्तुत करते हैं परन्तु मैं आपको स्पष्ट बता देना चाहता हूं कि मेरा अधिकार न तो मेरी बुद्धि पर निर्भर है और न ही मेरी निर्बुद्धि पर। प्रचारक का अधिकार उसकी बुद्धि पर निर्भर नहीं करता है।

तीसरी बात, प्रचारक का अधिकार मनोवैज्ञानिक नहीं है। मैं दर्शन शास्त्र का वाचस्पति नहीं हूं। आपको यह जान लेना आवश्यक है। आप इस बात पर हंसेंगे परन्तु हमारी कलीसियाओं में अनेक सदस्य हैं जो अपने पास्टर को एक महिमामय मनोवैज्ञानिक, एक ऐसा परामर्शदाता समझते हैं जिसके पास उनकी सब समस्याओं का समाधान है। उनकी यह मानसिकता प्रचारक के प्रचार को प्रभावित करती है क्योंकि अधिकतर ऐसा होता है कि प्रचारक वचन बांटने की अपेक्षा मनुष्यों के प्रश्नों के उत्तर देने लगता है। वाल्टर कैसर का कहना अति उत्तम है, "अधिकांश पास्टर एक या दो बाइबल वाक्यांशों पर अपना पूरा सन्देश सुना देते हैं जिसे शायद ही कोई पहचानता है। वे पास्टर उनसे भी अधिक हैं जो यह मानते हैं कि मनुष्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बाइबल एक रुकावट है। अतः उन्होंने अपने उपदेशों को स्वास्थ्य लाभ और मनोविज्ञान की बज़ारु पुस्तकों से तैयार करना आरंभ कर दिया है। बाज़ार का तो यह सिद्धान्त है कि यदि हम चाहते हैं कि मनुष्य हमारे द्वारा निर्मित बड़ी बड़ी वेदियों के लिए पैसा दे तो हमें उन्हें वही देना है जो वे सुनना चाहते हैं।"

मेरा उद्देश्य कदापि नहीं कि मनोविज्ञान या परामर्श की आलोचना करुं परन्तु मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि यदि आपकी मनोकामना ऐसी शिक्षाओं की है जो आपकी अपनी सहायता के लिए हों तो आपको इस अध्ययन में वह प्राप्त नहीं होगी। मेरा अधिकार मेरी मनोविज्ञान की दक्षता पर निर्भर नहीं है कि उसे मैं आपके सामने रखूं। प्रचारक का अधिकार न तो उसका अपना है, न ही किसी संस्था का है, न ही बौद्धिक है, न ही मनोवैज्ञानिक है और अन्त में, न ही वह अनुभव आधारित है। आज यह धारणा अत्यधिक प्रचलित वरन् भ्रमित है। यह कलीसिया में सर्वमान्य है कि कोई किसी विषय की चर्चा करने योग्य तब ही हो सकता है जब उसने उसका अनुभव प्राप्त किया हो। अधिकार संपन्न प्रचार की यही प्रचलित विधि है।

इस प्रकार, हमारा सोचना है कि यदि मैं ने व्यभिचार किया है तो मेरी सहायता के लिए वही व्यक्ति सही है जिसने व्यभिचार का अनुभव स्वयं किया हो। दूसरे शब्दों में, यदि मैं ने कोई पाप किया है तो मेरी सहायता के लिए सर्वोत्तम व्यक्ति अर्थात वास्तव में अधिकार संपन्न व्यक्ति वही है जिसने वह पाप स्वयं किया है। मेरे मित्रों, यह हास्यास्पद विचार है। यदि वस्तुस्थिति यही है तो यीशु के पास तो हमें देने के लिए कुछ भी नहीं है।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यीशु कभी भी व्यभिचार, अनैतिकता, झूठ, धोखा, आदि हमारे संघर्ष के विषयों से नहीं गुज़रा। वह एक बार भी परीक्षा में नहीं पड़ा और इस कारण, एकमात्र वही हमें इन परीक्षाओं से पार लगा सकता है। ऐसे विचार कि अधिकार अनुभव से है, संपूर्ण सुसमाचार और मसीह के व्यक्तित्व के महत्त्व को कम कर देते हैं। प्रचारक के अधिकार का संबन्ध इन बातों से कदापि नहीं है क्योंकि प्रचारक का अधिकार बाइबल आधारित है।

अतः मैं आपको आरंभ ही में स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि परमेश्वर के जनों के समक्ष खड़े होनेवाले व्यक्ति का अधिकार परमेश्वर के वचन पर आधारित होता है। जब तक वह परमेश्वर के वचन का प्रचार करता है अर्थात उसके मुंह की बातें परमेश्वर के वचन से सुसंगत है तब तक तीतुस 2:15 के अनुसार वह अधिकार से कह रहा है। परन्तु ज्यों ही वह परमेश्वर के वचन से अपने विचार, अपनी इच्छा, अपने सिद्धान्त पर आता है त्यों ही उसका अधिकार जाता रहता है।

यह परमेश्वर के वचन पर आधारित है। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की प्रजा के सामने आता था तो उसका आख्यान कैसे आरंभ होता था? "यहोवा यों कहता है..." और तब वह परमेश्वर का सन्देश सुनाता था। यदि आप परमेश्वर के जनों के समक्ष खड़े होकर कहें, "परमेश्वर यों कहता है..." तो आप सुनिश्चित

करें कि परमेश्वर क्या कहता है। यदि आप परमेश्वर का वचन सुना रहे हैं तो आप उसे भली भांति जान लें तो अच्छा होगा।

तो परिदृश्य यह है। संपूर्ण अधिकार परमेश्वर के वचन से ही संयोजित है। अब आप सोच रहे होंगे, "विषय तो हमारा नारीत्व है तब आप प्रचार करने की बात बीच में क्यों ला रहे हैं? यह तो प्रचार विषय की कक्षा प्रतीत होती है। इसे सुनने से क्या लाभ?" इस श्रृंखला का विषय नारीत्व ही है और हम अविवाहित अवस्था की, विवाह की और माता–पिता के उत्तरदायित्वों की, बच्चों की और पुरुषत्व के विषय चर्चा करेंगे। हम इन सब विषयों पर चर्चा करेंगे।

आरंभ में मैं आपको यह भी बता देना चाहता हूं जो इस अध्ययन में ही नहीं वरन् सदैव आपको ध्यान रहे कि मेरा अधिकार मुझ पर आधारित नहीं है। यह मेरा वैयक्ति अधिकार नहीं है। यदि ऐसा हो तो मैं बड़ी समस्या में पड़ जाऊंगा क्योंकि, स्पष्ट कहता हूं कि मैं एक नारी नहीं हूं। यदि मेरा अधिकार मुझ पर आधारित हो तो नारीत्व पर प्रचार करना बहुत कठिन होगा।

अधिकार वैयक्तिक नहीं है, संस्थागत नहीं है, बौद्धिक नहीं है। कृपया ध्यान दें, मैं आरंभ से ही दावा नहीं कर रहा हूं कि मैं बुद्धिमान हूं जिसके पास आपकी सब वैवाहिक एवं पारिवारिक समस्याओं का समाधान है। यह बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक, और अनुभव आधारित नहीं है। यह एक अत्यधिक वृहत्त विषय है क्योंकि पारिवारिक विषय अनेक होते है– विभिन्न परिवारों की विभिन्न समस्याएं! अतीत में विविधता, परिस्थितियों में विविधता, संघर्षों में विविधता, भावात्मक समस्याएं आदि। अतीत के या वर्तमान के अनेक दुखःद संघर्ष आदि।

और सत्य तो यह है कि परमेश्वर के वचन पर मनन करते समय ऐसे समय भी आएंगे जब परमेश्वर का वचन स्पष्ट और प्रभावी रूप से हम पर प्रकट होगा वरन् चुनौती देगा। ऐसे में हम पर बड़ी परीक्षा होगी। शैतान हमारे कान में कहेगा, "इसे नहीं पता कि क्या कह रहा है। वह आपकी समस्याओं को नहीं जानता है। इसकी बातें आपके मतलब की नहीं हैं।"

और आप ऐसे प्रचारक की खोज में निकल पड़ेंगे जिसके विचार आपके विचारों से मेल खाते हों। परन्तु मैं आपको हमारे अध्ययन के आरंभ में ही चिता देता हूं कि आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं, उसकी मैं चिन्ता नहीं करता। मैं तो केवल यह चाहता हूं कि आप इस अध्ययन में एकमात्र यही प्रश्न पूछें, "क्या परमेश्वर का

वचन यही कहता है?" और यदि आपको विश्वास हो जाए कि परमेश्वर का वचन यही कहता है तो मेरे विषय में आपकी राय की अपेक्षा आपके जीवन में वही सर्वोच्य प्राथमिकता है। यदि आप मसीह के अनुयायी हैं तो आपके जीवन में इसकी अनिवार्यता बहुत बड़ी होगी।

अब जब आपने यह मान लिया कि यह परमेश्वर का वचन है तो प्रश्न यह उठता है, "क्या वह आपका राजा है?" "क्या आप अपना जीवन और अपनी पारिवारिक परिस्थितियों में प्रदर्शित प्रतिक्रिया उसको समर्पित करेंगे?" मैं आपको बता देना चाहता हूं कि मैं सुसमाचार और अपने परिवारों के लिए परमेश्वर के वचन से हटकर अन्य कोई अधिकार नहीं दिखाता हूं। मैं सबसे अधिक वचन की निकटता में रहना चाहता हूं। यदि मैं वचन से भटक जाऊं तो आप सुनना बन्द कर दें। परन्तु जब तक यह वचन ही है जो सुनाया जा रहा है तब तक, मेरा निवेदन है, प्रोत्साहन है कि आप सुनें। मैं प्रार्थना कर रहा हूं क्योंकि आप लोगों की समस्याएं अनेक हैं। मेरे मुंह की बातें कुछ ऐसी होंगी जो यहां किसी को प्रोत्साहित करें तो वहां किसी को ठेस पहुंचाएं।

मैं प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वर अपने आत्मा के सामर्थ्य द्वारा अपने वचन को आप में से प्रत्येक के जीवन में प्रासंगिक बनाए। अतः आप भी मेरे साथ ऐसी ही प्रार्थना करें। आइए हम अपने मन खोलें और कहें, "हे परमेश्वर, तेरा वचन जो भी कहता, उसे हम चाहते हैं कि हमारे परिवार से प्रकट हो इसलिए हम तेरे वचन को सुनने के लिए अपना मन खोलते हैं।" अब इस पारदर्शिता के साथ हम इस प्रकाश में मनन करेंगे कि हमारे अध्ययन का यह वचन किसी का अपना विचार नहीं परमेश्वर का वचन है। यह दूसरी चितौनी लाता है।

वचन प्रचारक के अधिकार का एकमात्र स्रोत ही नहीं उसकी लेखादायी का एकान्तक स्रोत है। मैं यह इसलिए आप पर प्रकट करता हूं कि एक दिन आएगा जब मैं परमेश्वर के सामने खड़ा होकर अपने वचनों का लेखा दूंगा। मैं आशा करता हूं कि इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा। यही कारण है कि इस अध्ययन श्रृंखला में मैं धर्मशास्त्र की कठोर चेतावनियों को, प्रार्थना करता हूं कि निर्भीकता पूर्वक कहने पाऊं क्योंकि परमेश्वर के समक्ष यह मेरा उत्तरदायित्व है कि मैं ऐसा करुं। और मेरे विचार में परमेश्वर के जनों के लिए यह अच्छा ही है।

प्रचारक वचन का प्रचार करने के लिए परमेश्वर के समक्ष लेखादायी है चाहे वह इक्कीसवीं शताब्दी के मनुष्यों के कानों को सुनने में अच्छा लगे या न लगे। अतः यह प्रचारक का परमेश्वर के समक्ष उत्तरदायित्व

है कि वचन का परिशुद्ध प्रचार करे और परमेश्वर के समक्ष वचन के अनुसार जीवन भी जीए। तीतुस 2:17 में पौलुस तीतुस से कहता है कि वह अपना जीवन एक आदर्श जीवन बनाए रखे। परिवार पर उपदेशों की श्रृंखला के पीछे यही एक तथ्य है। यद्यपि मैं नारीत्व के विषय चर्चा कर रहा हूं जो सीधा मुझसे प्रासंगिक नहीं है तथापि यह मनन एक पति और एक पिता के लिए चुनौती भरा है या यों कहें कि पत्नी के प्रति या मेरी सन्तान की माता के प्रति मेरे दृष्टिकोण से संबन्धित है। आनेवाले अध्ययनों में हम विवाह और पुरुषत्व संबन्धित विषयों पर भी चिन्तन करेंगे और समझेंगे कि परमेश्वर हमसे वही कहता है जो पौलुस ने तीतुस से कहा, "सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना।"

मैं आपसे निवेदन करुंगा कि मेरे लिए और मेरे परिवार के लिए प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमें अनुग्रह प्रदान करे कि उसके वचन के आधार पर जीवन जीएं। अब इस आधार पर इन दो चितौनियों का जो वास्तव में कुंजी हैं, मैं अपने पिछले अध्ययन के मुख्य बिन्दुओं का, सुसमाचार का और अपने इस अध्ययन का, परिवारों के विषय का अवलोकन करना चाहता हूं। और मैं चाहता हूं कि आप देखें कि सुसमाचार हमारे परिवारिक जीवन को दो मुख्य रूप से कैसे प्रभावित करता है।

पहला, नारीत्व के संबन्ध में, सुसमाचार बाइबल आधारित नारीत्व की नींव है। हमने पिछने अध्ययनों में इस पर चर्चा की है। सुसमाचार आप मसीहियों के लिए एक दिन की कक्षा नहीं है। सुसमाचार तो वास्तव में विद्यालय की ईमारत है जिसमें विभिन्न कक्षाएं बनी हुई हैं। सुसमाचार हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को थामे हुए है। यही पौलुस तीतुस 2:11–14 में कहता है। कृपया पढ़ें, "परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर, इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं, और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिस ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी जाति बना ले जो भले भले कामों में सरगर्म हो।" यही सुसमाचार है। पौलुस ने पूर्व के दस पदों में अभी यही कहा है कि युवक क्या करें, बूढ़े पुरुष क्या करें, जवान स्त्रियां क्या करें, बूढ़ी स्त्रियां क्या करें, सेवक क्या करें। और वह कहता है कि इसका मुख्य कारण है कि सुसमाचार हमारी आधारशिला है। अब प्रश्न यह है, "सुसमाचार हमारी आधारशिला कैसे है?"

पहली बात, परमेश्वर का अनुग्रह, सुसमाचार, हमारे अतीत को ढांप देता है। ये एक दूसरे का पश्चावरण हैं। परमेश्वर का अनुग्रह हमारे अतीत को ढांप देता है। उसने हमें उद्धार में प्रवेश दिलाया है। यही हम देख

रहे थे कि नया जीवन है। हमारा नया जन्म परमेश्वर के अनुग्रह से होता है। उसका अनुग्रह हमें मसीह में विश्वास लाने के योग्य बनाता है परन्तु वह हमें यही लाकर रोक नहीं देता है। इस समय हम नरक जानेवालों की पंक्ति से बाहर आ गए हैं। अब आप स्वर्ग जानेवालों की पंक्ति में खड़े हैं। सब कुछ बहुत अच्छा हो गया है। नहीं, यह उद्धार का आरंभ है। आपका उद्धार हो गया है, आपका नया जन्म हो गया है, सदा के लिए नया जन्म! अब परिदृश्य यह है कि उसका अनुग्रह हमारे अतीत को ही नहीं ढांपता, वह हमारे वर्तमान जीवन को सामर्थ्य प्रदान करता है। पद 12 में यही कहा गया है, "हमें चेतावनी देता है..." अर्थात हमें प्रशिक्षण प्रदान करता है। हमें अनुशासित करता है। अनुग्रह हमारा शिक्षक है, मेरे मित्रों! अनुग्रह आपको शिक्षा दे रहा है, आपको प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है और अनुशासित कर रहा है– कि आप प्रतिदिन मसीह के स्वरूप में बदलते–बढ़ते जाएं और पद 14 में लिखा है, "शुद्ध करके।"

तो परिदृश्य है। ऐसी कोई भी स्त्री नहीं है जो अपने बल पर इस योग्य सिद्ध हो। आपको ऐसा जीवन जीने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है। ऐसा कोई पुरुष नहीं जो बाइबल आधारित पुरुषत्व प्रकट कर पाए। आपको इसके लिए अनुग्रह की आवश्यकता है। अनुग्रह आपके वर्तमान को सामर्थ्य प्रदान करता है। विवाहित जीवन या माता–पिता का जीवन, या सन्तान का जीवन जीने की एकमात्र विधि है सुसमाचार आधारित जीवन, परमेश्वर से अनुग्रह प्राप्त जीवन। उसका अनुग्रह हमें जीवन का प्रशिक्षण देता है। उसका अनुग्रह हमारा अतीत ढांप देता है, उसका अनुग्रह हमारे वर्तमान जीवन को सामर्थ्य प्रदान करता है और उसका अनुग्रह हमारे भविष्य को सुरक्षित रखता है। पद 13 यही कहता है, हम "उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें।"

आप देखते हैं कि सुसमाचार उन सब बातों का आधार है जिन्हें हम पढ़ेंगे। उसका अनुग्रह इस संपूर्ण परिदृश्य की आधारशिला है। सुसमाचार उद्धार का आधार ही नहीं। दूसरी बात–सुसमाचार बाइबल आधारित नारीत्व का उद्देश्य है। यह बात मैं आपको तीतुस 2 में तीन अलग–अलग पदों में दिखाना चाहता हूं। इन तीन अलग–अलग स्थानों में पौलुस "कि" से जुड़े वाक्यांशों का प्रयोग करता है जिसका अर्थ है कि उसने एक आज्ञा दी और उस आज्ञा के पालन का कारण समझा रहा है। उस आज्ञा के पालन का उद्देश्य क्या है? ऐसे वाक्यांश उद्देश्य आधारित वाक्यांश कहलाते हैं।

मेरे साथ तीतुस 2 पद 9 और 10 देखें। पद 10 के अन्त में देखें वह दासों के लिए निर्देश दे रहा है। "दासों को समझा कि अपने–अपने स्वामी के अधीन रहें, और सब बातों में उन्हें प्रसन्न रखें और उलटकर

जवाब न दें, चोरी चालाकी न करें, पर सब प्रकार से पूरे विश्वासी निकलें कि वे सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की शोभा बढ़ाएं।"

उन्हें यह आज्ञा मानना है कि वे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की शोभा बढ़ाएं। अब पद 7 के मध्य में देखें। यह पद युवकों से संबन्धित हैं, "तेरे उपदेश में सफाई, गंभीरता, और ऐसी खराई पाई जाए कि कोई उसे बुरा न कह सके..." यहां फिर से पौलुस कहता है, "जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हो जाएं।"

अब देखिए, वह युवा स्त्रियों के बारे में कह रहा है। पद 4, "ताकि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें, और संयमी, पतिव्रता, घर का कारोबार करनेवाली, भली और अपने–अपने पति के अधीन रहनेवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए।" ध्यान दीजिए, फिर से वही उद्देश्यगत वाक्यांश, "ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए।" अतः पौलुस जो परिदृश्य प्रस्तुत कर रहा है, वह है कि आप ऐसे काम करें, आपका व्यवहार ऐसा हो कि कोई परमेश्वर के वचन की निन्दा न करने पाए। कि किसी को हमारे बारे में बुरा कहने का अवसर न मिले। कि मनुष्यों को हमारे उद्धारकर्ता का चित्रण आकर्षक लगे।

यहां मैं आपको, बहनों चिताना चाहता हूं कि जब हम नारीत्व के बारे में चर्चा करते हैं तो नारीत्व की चर्चा का सर्वप्रथम उद्देश्य संस्कृति और सुख–साधन नहीं है अर्थात संस्कृति आवश्यक है कि पौलुस प्रथम शताब्दी के उन मनुष्यों को लिख रहा है जो मसीही विश्वास का आरंभ है और उनके परिवारों द्वारा मसीह का प्रभाव कैसा दिखाई देना चाहिए। इतिहास में पहली बार, प्रथम शताब्दी में माता–पिता, पति, पत्नी, बच्चे संसार को–परिवेश में रहनेवाली अन्यजातियों को दिखाएंगे कि मसीह परिवार में कैसा अन्तर उत्पन्न करता है।

ऐसा आचरण आसान नहीं था। संपूर्ण नये नियम में उनकी बुलाहट थी कि एक समानान्तर परन्तु भिन्न संस्कृति का प्रदर्शन करें। हम यही देखेंगे यद्यपि हममें और उनमें समानता नहीं है। अतः आज हमारी संस्कृति में मसीही परिवारों पर कटाक्ष किया जाता है। इसमें भी सन्देह नहीं कि हमारे अध्ययनों में बाइबल की जो शिक्षा हम पाएंगे वह अनेक परिप्रेक्ष्यों में हमें अपनी संस्कृति में गोल सुराख में चौकोर खूंटा बनाएंगी। अतः हमें यह निर्णय लेना होगा कि हमारी संस्कृति जो कहती है वह सही है या परमेश्वर जो कहता है वह सही है।

यह सांस्कृतिक सुभीता नहीं है। अतः इसके परिणामस्वरूप सुभीता नहीं है। दूसरी बात बाइबल आधारित नारीत्व का उद्देश्य यह भी नहीं है कि उसे हम वैयक्तिक अभिरूचि या वरीयता मानें। देवियों और सज्जनों, हम आनेवाले अध्ययनों में इस पर अधिकाधिक गहन विचार करेंगे। हमें यह स्वष्ट समझ लेना है कि विवाह का, बच्चों के पालन पोषण का, परिवार का उद्देश्य आपका या मेरा व्यक्तिगत सन्तोष या व्यक्तिगत अभिरूचि नहीं है। धर्मशास्त्र में जिन आज्ञाओं पर हम ध्यान देंगे उनका अभिप्राय यथा–संभव व्यक्तिगत सुविधाओं को उत्पन्न करना नहीं हैं वे आपकी अभिरूचियों के अनुकूलन के लिए नहीं है या आपके विचारानुसार आपकी कामनाओं की अधिकाधिक पूर्ति के लिए नहीं है।

आपको चिताने में मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि आपका विवाहित जीवन या आपकी सन्तान का पालन पोषण संतोषजनक नहीं है परन्तु यह कि ये अच्छी बातें हैं। हम यही देखेंगे। आप इन्हें परमेश्वर की योजना के अनुसार निभाते हैं तो ये अति उत्तम बातें हैं परन्तु सत्य तो यह है कि हमें इन्हें आरंभ से ही देखना है। क्योंकि इसमें सर्वोपरि हम नहीं परमेश्वर की महिमा है। विवाहित जीवन का उद्देश्य है कि परमेश्वर की महिमा का प्रदर्शन हो, कि हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की शिक्षाएं आकर्षक प्रकट हों।

बच्चों के पालन–पोषण का उद्देश्य है कि हम परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करें। हमारे जीवन और परिवारों का उद्देश्य है कि परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करें और इसके निमित्त हम अपनी अभिरूचियों और सुविधाओं का त्याग करते हैं। यह समझ लेना आरंभ से ही मुख्य बात है। बाइबल आधारित नारीत्व का उद्देश्य न तो सांस्कृतिक सुभीता है और न ही व्यक्तिगत अभिरूचि है। बाइबल आधारित नारीत्व का मुख्य उद्देश्य है, मसीह यीशु के सौंदर्य का प्रदर्शन, हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की शिक्षाओं के आकर्षण का प्रदर्शन।

अतः हम इसी पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। हम अपना जीवन कैसे जीएं, महिलाओं आप अपना जीवन कैसे जीएं कि हमारे जीवन से मसीह यीशु का सुसमाचार प्रदर्शित हो। यही एक विचाराधीन प्रश्न है। यदि आपका प्रश्न यह है कि आपके लिए सबसे उत्तम बात क्या है या सबसे अधिक सुलभ बात क्या है तो हम धर्मशास्त्र को अर्थपूर्ण नहीं बना पाएंगे। जब हमें यह बोध हो जाए कि हमारा उद्देश्य मसीह के सौंदर्य का प्रदर्शन है तब हम स्त्रियों और पुरुषों के लिए परमेश्वर की योजना में प्रवेश करेंगे। मसीह के सौंदर्य का प्रदर्शन और मसीह के कार्य को बढ़ाना कि कोई परमेश्वर के वचन की निन्दा न करे! कि कोई हमारे विषय बुरी बात न कह पाए! कि मनुष्य इस इक्कीसवीं शताब्दी में परिवारों पर सुसमाचार का प्रभाव देख पाएं।

क्या हमें बोध होता है कि आज इसकी आवश्यकता कैसी महान है? आज का अविश्वासी संसार कलीसिया में परिवारों को देखकर कहता है, "इसमें क्या अन्तर है? आपके परिवार तो वैसे ही दिखाई देते हैं जैसे अन्य सब परिवार।"

मैं यहां अत्यधिक सावधान रहना चाहता हूं क्योंकि –मैं जानता हूं कि आपमें ऐसे स्त्री पुरुष हैं, ऐसी पारिवारिक परिस्थितियां हैं जिनके कारण पिछले जीवन में मसीह की महिमा प्रकट नहीं थी। मैं जानता हूं कि आपमें तलाक के दुखःद अनुभव हैं। ऐसे स्त्री पुरुष हैं जिन्होंने अपने बच्चों का परित्याग किया है। यही कारण है कि मैं आरंभ ही से परमेश्वर के अनुग्रह का परिदृश्य सामने रखकर चल रहा हूं। परमेश्वर का अनुग्रह! परमेश्वर की स्तुति हो, उसके अनुग्रह ने हमारे अतीत पर परदा डाल दिया है।

मैं आपको अपराध का बोध करवाना नहीं चाहता हूं परन्तु मैं यह कहना चाहता हूं कि यदि आपका अतीत ऐसा रहा हो या आपके परिवार द्वारा मसीह की महिमा प्रकट नहीं हुई और मसीह के कार्य आगे नहीं बढ़ाए गए तो उसका अनुग्रह आपके अतीत को ढांप देगा। तथापि मुझे पूरा विश्वास है कि इस अध्ययन के समय भी ऐसे स्त्री और पुरुष हैं जो अपने विवाह को टूटने से बचाने के लिए संघर्षरत हैं। माता–पिता का उत्तरदायित्व निभाने में, वरन् परिवार के अन्य अनेक पक्षों को संभालने में संघर्ष कर रहे हैं। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप मसीह के अनुग्रह को दृढ़ता से थामें रहें। मैं अपने सर्वस्व द्वारा इन अध्ययनों में आपसे निवेदन करुंगा कि मसीह के अनुग्रह को दृढ़ता से थामें रहें।

मैं स्त्री–पुरुष दोनों से और विशेष करके स्त्रियों से कहना चाहता हूं कि आप, स्त्री होने के नाते कहें, "मसीह का सुसमाचार कार्यरूप में ऐसा ही दिखाई देता है।" संसार को यह देखना है। संसार को आपमें यह देखना आवश्यक है। संसार आपमें देखे। संसार कलीसिया के पुरुषों में देखें। मैं प्रार्थना करता हूं और चाहता हूं कि आप भी मेरे साथ प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमारे परिवारों में सुसमाचार विमोचन मंच तैयार कर दे।

मैं प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वर हम सबके परिवारों में स्वास्थ्य प्राप्ति में, पुनरुद्धार में, स्वतंत्रता प्रदान करने में और आनन्द लाने में अपना सामर्थ्य प्रकट करे। मैं प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वर हम विश्वासियों के विवाहित जीवन ऐसे बनाए जो उसका सामर्थ्य प्रकट करें कि हमारे पड़ोसी, सब जातियां, संपूर्ण संसार हमारे विवाहित जीवन और पारिवारिक जीवन द्वारा देखें कि सुसमाचार भला है और मसीह आकर्षक है।

क्या आप मेरे साथ इसके लिए प्रार्थना करेंगे? प्रार्थना करें कि परमेश्वर सुसमाचार का विमोचन मंच तैयार करे।

बाइबल आधारित नारीत्व का यही उद्देश्य है। हमारे इस अध्ययन में हम जब इसकी चर्चा करेंगे और तीतुस 2 में देखेंगे कि धर्मशास्त्र में स्त्री का रूप क्या होना चाहिए तो हमारा उद्देश्य यही है कि सुसमाचार सब जातियों में पहुंचे। यही कारण है कि हम इसकी चर्चा कर रहे हैं क्योंकि हम मसीह के सौंदर्य को प्रकट होता देखना चाहते हैं।

यह चर्चा करने के बाद अब हम गुप्त कलीसिया की विधि पर आगे बढ़ते हैं। हमारे पास यह गद्यांश दो भागों में विभाजित हैः बूढ़ी स्त्रियां और युवा स्त्रियां। आप संभवतः यह सोच रहे होंगे कि बूढ़ी स्त्री से तात्पर्य है, वह स्त्री जो सन्तानोत्पत्ति की या सन्तान के लालन–पालन की आयु पार कर गई है और युवा स्त्री से अर्थ है कि वह स्त्री जो अभी सन्तान जनने और उसके लालन–पालन की आयु में है। यहां ऐसी कोई सीमा निर्धारित नहीं की गई है।

आपके पास पौलुस के जो वचन हैं, वे इस प्रकार हैं, "बूढ़ी स्त्रियों का चाल–चलन पवित्र लोगों सा हो, वे दोष लगानेवाली और पियक्कड़ नहीं, पर अच्छी बातें सिखानेवाली हों।" ये पद सुस्पष्ट हैं, हम इन पर सरसरी निगाह डालते हुए आगे बढ़ेंगे और कुछ एक विषयों पर बाद में चर्चा करेंगे। मेरा मुख्य उद्देश्य है कि आप तीतुस अध्याय 2 में बाइबल आधारित स्त्री का चरित्र–चित्रण समझें। मैं आपसे यह कहते हुए आगे बढ़ रहा हूं कि हम इस विषय पर कुछ चर्चा कर चुके हैं। यह गद्यांश उन गद्यांशों में से एक है जिन्हें गलत समझा गया और निन्दित किया गया है। आज कलीसियाओं में आमूल नारीवाद, सांसारिक नारीवाद प्रवेश कर चुका है और तीतुस 2:3–5 को अतिवाद और लिंगभेद तथा अप्रचलित माना जाता है।

आज अनेक जन अपने पास्टर को या तीतुस 2:3–5 जैसी बातों को कहते हैं, "यह अब प्रचलन में नहीं है।" अतः यह मेरे जीवन में वैकल्पिक है। मैं आपको स्पष्ट बता देना चाहता हूं कि परमेश्वर का वचन वैकल्पिक नहीं है। जब हम भली भांति समझ लेंगे कि वचन क्या कह रहा है तब हम इसे अतिवाद नहीं कहेंगे। हम इसे लिंगभेद नहीं कहेंगे। हम इसे अप्रचलित नहीं कहेंगे। हम कहेंगे "यह तो सृष्टि के आरंभ ही से परमेश्वर की योजना है और हमारे लिए यह आवश्यक है। हमारे लिए आवश्यक है कि उसके पास हमारे परिवारों के लिए जो भी है, हम उसका अनुभव करें। यही कारण है कि हम वचन को सुनेंगे और अपना जीवन वचन के अधीन कर देंगे।

मैं पहले बूढ़ी स्त्रियों के बारे में चर्चा करुंगा। सुसमाचार और बूढ़ी स्त्रियां! तीतुस 2:3 में तीन मुख्य आज्ञाएं हैं, "इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चाल चलन पवित्र लोगों सा हो, वे दोष लगानेवाली और पियक्कड़ नहीं पर अच्छी बातें सिखाने वाली हों।"

पहली आज्ञा! सुसमाचार और बूढ़ी स्त्रियां–सुसमाचार बूढ़ी स्त्रियों को पवित्र होने की प्रेरणा देता है। अपना जीवन परमेश्वर के समक्ष भक्ति में बिताएं। वे युवा स्त्रियों के लिए आदर्श स्थापित करें। उन पर प्रकट करें कि पवित्र परमेश्वर के समक्ष जीवन कैसा होना है। अपने जीवन–आचरण से प्रकट करें। पवित्र बनें!

दूसरी आज्ञा, मसीह की देह का निर्माण करें। इसे वह दो परिप्रेक्ष्यों में व्यक्त करता हैः पहला, दोष लगानेवाली न हों। अपनी जीभ से मसीह की देह का निर्माण करें– अपने वचनों द्वारा। बूढ़ी स्त्रियों, आपकी भाषा ऐसी हो कि उसके द्वारा सुननेवालों में मसीह के स्वभाव का निर्माण हो। अपनी बोली ऐसी रखें कि मसीह की देह का निर्माण हो। व्यर्थ की बातें न करें। दोष न लगाएं। ऐसी बातें न करें जो किसी काम की न हों। इफिसियों अध्याय 4 में पौलुस कहता है मसीह यीशु में जो आवश्यक है उसके अनुसार अन्यों का निर्माण करें। अपनी जीभ को वश से बाहर न होने दें कि मसीह की देह का निर्माण बाधित हो।

आप देख रहे हैं कि यह कैसा कठिन कार्य है। ऐसा प्रतीत होता है कि मैं अपनी दादी को समझा रहा हूं कि उन्हें कैसे रहना है। यह एक आसान काम नहीं हैं परन्तु यह परमेश्वर के वचन का अधिकार है इसलिए हमें सुनना ही होगा। वचन कहता है, "दोष लगानेवाली... नहीं... ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए।" यह जीभ को वश में रखना ही नहीं, मसीह की देह के निर्माण का समग्र चित्रण ही नहीं, व्यक्तिगत परिदृश्य है। अधिक मद्यपान की आदी न हों अर्थात आत्मनियंत्रण से बाहर न हों जो तीतुस के संपूर्ण अध्याय 2 में व्यक्त है। कहने का अर्थ यह है कि अपनी देह अर्थात परमेश्वर के मन्दिर की रक्षा करें। मसीह की देह का निर्माण करें। पवित्र रहें और मसीह की देह का निर्माण करें।

अब यहां बड़ी अच्छी बात आती है, "वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें।" अतः संपूर्ण परिप्रेक्ष्य यह है कि वे पवित्र रहें, मसीह की देह का निर्माण करें। क्यों? इसलिए कि आप युवा स्त्रियों को चेतावनी दें तथा शिक्षा दें। पवित्र रहें, मसीह की देह का निर्माण करें और तीसरी आज्ञा है, "अच्छी बातें सिखानेवाली हों अर्थात शिष्य बनाएं।" यही आमूल रूप से शिष्य बनाना है। यह बूढ़ी स्त्रियों के लिए बाइबल का आदेश है, "युवा स्त्रियों को शिष्य बनाओ उन्हें दिखाओ कि मसीही जीवन क्या है।"

यह मसीही समाज में बूढ़ी स्त्रियों को परमेश्वर द्वारा सौंपा गया काम है। युवा स्त्रियां आपमें यह व्यवहार देखें। यही कारण है कि पौलुस कहता है– मेरा अतिप्रिय पद! वह तीतुस को लिख रहा है और उसके मन की बात यह है, "तीतुस (हम ईमानदारी से कहें कि) तेरी प्रवीणता इसमें नहीं है कि युवा और वृद्ध स्त्रियों को आचरण की शिक्षा दे। अतः तू वृद्ध स्त्रियों को तैयार कर कि वे युवा स्त्रियों को प्रशिक्षण प्रदान करें और उन्हें दिखाएं कि यह दूतकार्य कैसा होता है। वे उन्हें दिखाएं कि मसीही जीवन कैसा दिखता है।"

संपूर्ण समाज में यह वृद्ध स्त्रियों का दायित्व है। में यहां परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहता हूं कि अन्य विश्वासी समुदायों की तुलना में हमारे मध्य कुछ अति उत्तम वृद्ध स्त्रियां हैं– अति मूलयवान! मैं कभी नहीं भूलूंगा कि एक दिन मुझे यहां एक वृद्ध स्त्री मिली जो मुझे पकड़कर एक ओर ले गई। मैं उसे नहीं जानता था। उसने कहा, "मैं आपको बताना चाहती हूं कि आप जो वचन हमारे साथ बांट रहे हैं, उसके लिए हम आपके बहुत आभारी हैं।" मैं ने कहा, "धन्यवाद!" उसने आगे कहा, "मैं किसी से बात कर रही थी तो मैं ने उनसे कहा कि हमारे आनेवाले पास्टर आपको ही होना चाहिए।" मैं ने कहा, "ठीक है।" तो वह कहने लगी, "आप जानना चाहेंगे कि उन्होंने प्रति उत्तर में क्या कहा?" मैं ने पूछा, "उन्होंने क्या कहा होगा?" उसने कहा, "हो सकता है परन्तु यहां का पास्टर होने के लिए आपको कम से कम 35 वर्ष का होना है।" मैं ने कहा, "अच्छा!" उसने मुझे घूरते हुए कहा, "क्या आप जानना चाहते हैं, मैं ने उनसे क्या कहा?" मैं ने पूछा, "क्या?" उसने कहा, "मैं ने उनसे कहा कि यदि यह बात है तो मसीह यीशु भी यहां का पास्टर नहीं हो सकता!" मैं आश्चर्यचकित, "जी हां, जी हां।" कहता रहा।

उस वार्तालाप के बाद से आज तक मैं देख रहा हूं कि कुछ असामान्य वृद्ध पुरुषों एवं स्त्रियों को परमेश्वर ने इस विश्वासी परिवार का बोझ सौंपा है कि हमारे दूतकार्य में अगुवाई करें। वे दिखा रहे हैं कि यह दूतकार्य करने में कैसा दिखाई देता है। जब हैदर और मैं यहां आए थे तब इन्हीं प्रिय वृद्धों ने हमारा स्वागत किया था। मैं आपको प्रोत्साहित करते हुए तीतुस 2 में वरिष्ठ अगुओं की सेवा को कार्यरूप में दिखाना चाहता हूं। यह वृद्ध स्त्रियों का कहना है, "मैं युवा माताओं को दिखाऊंगी, मैं युवा पत्नियों को दिखाऊंगी कि मसीह का अनुसरण कैसा दिखाई देता है।" परिदृश्य यही है। शिष्य बनाओ। तीतुस 2 में वृद्ध महिलाओं पर सुसमाचार के ये तीन मनोभाव हैं।

अब युवा स्त्रियों के लिए सुसमाचार सात बातें कहता है। पहली बात, अपने–अपने पति से प्रेम करें। मैं अपनी इस सहभागिता में स्वार्थपरायणता दिखाना नहीं चाहता परन्तु आपको तीतुस अध्याय 2 में युवा स्त्रियों

के लिए दी गई इन आज्ञाओं को स्वीकार करना ही है। पहले वह कहता है, "अपने–अपने पति से प्रेम रखें।" और अन्त में वह कहता है, "अपने पति के अधीन रहनेवाली हों।" अतः आपके सामने बाइबल आधारित नारीत्व का परिदृश्य, तीतुस अध्याय 2 के अनुसार, पति से प्रेम करने में समाहित है। यही बात हम नये नियम के अन्य संदर्भों में भी देखते हैं।

पुराने नियम में आप उत्पत्ति 2:18 देखें, 1 कुरिन्थियों 11:8, 9 देखें। यहां मैं आपको स्मरण करवाना चाहता हूं कि हमने कुलुस्सियों के अध्ययन में भी इसकी चर्चा की है। देवियों, मैं आपको बता देना चाहता हूं कि आदेशानुसार पति का प्रेम, सन्तान के प्रेम से पहले है। उत्पत्ति 2:18 और 1 कुरिन्थियों 11:8, 9 का उल्लेख करने का मेरा कारण यह है कि ये दोनों संदर्भ स्त्रियों को चिताते हैं कि वे सर्वप्रथम अपने पति की सहायक हैं न कि बच्चों की माता। मैं आपको यह स्मरण केवल इसलिए कराता हूं कि धर्मशास्त्र, बाइबल आधारित स्त्री, पत्नी और माता को इस रूप में प्रकट करता है कि सन्तान के प्रति उसके प्रेम का उद्‌गम उसके पति–प्रेम से होता है। तीतुस अध्याय 2 में हमारे सामने यही प्रकट किया गया है। यही बात उन अन्य बाइबल संदर्भों में है जिनका अध्ययन हम अपने आनेवाले अध्ययनों में करेंगे।

देवियों, परमेश्वर के साथ आपके संबन्धों के अतिरिक्त आपकी प्राथमिकता है कि आप अपने पति से प्रेम करें। अविवाहितों के बारे में हम अगले अध्ययन में चर्चा करेंगे। अब तीतुस 2 में मेरी मनभावन बात यह तथ्य है कि वृद्ध महिलाएं युवा महिलाओं को शिक्षा दें कि वे अपने–अपने पति से प्रेम करें। इसका निहितार्थ है कि यह स्वभाविक प्रक्रिया नहीं है। आइए हम ईमानदारी से कहें कि कुछ पुरुष ऐसे होते हैं जिनसे प्रेम करना आसान नहीं है। उनके लिए कुछ करना होगा।

मैं अपनी पत्नी से इस विषय के बारे में चर्चा कर रहा था। उसने मुझे समझाने के विचार से कहा, "आप जानते हैं, कि आपको प्रेम करना सदा ही आसान नहीं होता है।" मैं ने कहा, "धन्यवाद!" वह सही कह रही थीं, सर्वथा सही। यहां कौन सा पुरुष ऐसा है कि उस से प्रेम करना सदैव आसान काम दिखाई दे? यदि आप सबको दिखाना चाहते हैं तो आप ध्यान दें आपकी पसली में किसी की कोहनी लग रही है। एक भी नहीं है! तीतुस 2 में यही परिदृश्य प्रस्तुत किया गया है। यह प्रेम ऐसा है जिसमें संकल्प की आवश्यकता है।

यह आसान काम नहीं है। जब मैं कहता हूं, "देवियों, आपके जीवन की प्राथमिकता है– पति से प्रेम करो– अपने–अपने पति से प्रेम करो।" तब मैं जानता हूं कि कुछ स्त्रियां मन में सोच रही होंगी, "यह मेरे पति को

नहीं जानता है।" मैं जानता हूं कि आप लोगों में से अनेक कठिन परिस्थितियों की प्रतिनिधि हैं। आप कहेंगी, "मैं अपने पति से प्रेम नहीं कर पाती हूं। इसके अनेक कारण हैं।" इसलिए तो मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूं कि आपका प्रेम, देवियों, आपके पति की योग्यता पर निर्भर नहीं करता है। यह आपके लिए परमेश्वर की आज्ञा पर निर्भर करता है कि आप अपने–अपने पति से प्रेम करें। यह एक बहुत बड़ी बात है।

संसार कहता है, आपका प्रेम निर्भर करता है कि पति से आपको क्या मिलता है अर्थात उनको कितने प्रेम का अधिकार है। यह निर्भर करता है कि उनमें उचित एवं सही क्या है। यदि वे सही आचरण न करें तो उन्हें आपके प्रेम का अधिकार नहीं है। परन्तु धर्मशास्त्र यह नहीं कहता है। धर्मशास्त्र केवल यही कहता है, "अपने पति से प्रेम करें।" यही कारण है कि हमें सुसमाचार और परिवार में संबन्ध देखना है। जो स्त्री प्रेम के अयोग्य पति के साथ रहती है, वह उससे प्रेम कैसे करेगी?

इसका एकमात्र उत्तर है, सुसमाचार! यह सुसमाचार का परिदृश्य है। सुसमाचार में एक परमेश्वर है जो प्रेमयोग्य से नहीं प्रेम के लिए अयोग्य से प्रेम करता है। उसने हमारे लिए जो सर्वथा अयोग्य थे, अपना जीवन दे दिया। आप अपने पति से प्रेम करें, यह कैसे हो सकता है? आपमें अवस्थित परमेश्वर के प्रेम के द्वारा! आपमें उपस्थित उसका अनुग्रह आपको सक्षम बनाएगा। 1 यूहन्ना 4:19 में लिखा है, हम उससे प्रेम क्यों करते हैं? क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया। केवल परमेश्वर ही है जो ऐसा प्रेम कर सकता है। यही कारण है कि हमारे परिवारों का आधार सुसमाचार और परमेश्वर का अनुग्रह है। उसका अनुग्रह प्रेम करने का सामर्थ्य है।

मैं जानता हूं कि मैं आपकी परिस्थिति की कल्पना नहीं कर सकता कि आप कैसी परिस्थिति का सामना कर रहे हैं परन्तु मैं यह कल्पना अवश्य कर सकता हूं कि आप में कुछ लोग प्रेम के लिए संघर्षरत हैं। मैं सोच सकता हूं– किसी व्यक्ति विशेष को मैं संबोधित नहीं कर रहा हूं– कि एक पत्नी है जिसका पति देर तक कार्यालय में रहने के बाद घर आता है और टी.वी. देखने बैठ जाता है। वह केवल दिन में एक या दो मिनट ही अपनी पत्नी को देता है। एक पत्नी है जिसका पति इंटरनेट पर व्यस्त रहता है। एक पत्नी है जिसका पति उसके मसीही विश्वास का और उसके मसीही मित्रों का विरोधी है।

अब इन सब परिस्थितियों को देखते हुए, स्वभाविक ही है कि आप कहेंगे, "परमेश्वर आपसे कैसे कह सकता है कि ऐसे पति से प्रेम करें?" इसका उत्तर है सुसमाचार! यह क्रूस है। यह आपका काम है कि परमेश्वर के निकट जाकर कहें, "मेरा पति प्रेम के योग्य नहीं है।" परमेश्वर कहेगा, "अयोग्य से प्रेम करना मेरी विशेषता

है और वह आपको अनुग्रह प्रदान करेगा। परमेश्वर हमें ऐसी कोई आज्ञा नहीं देता है जिसे पूरा करने का सामर्थ्य वह हमें न दे।" एक बार फिर से कहें, "परमेश्वर हमें ऐसी आज्ञा नहीं देता जिसे पूरा करने का सामर्थ्य वह हमें न दे।" उसका अनुग्रह! यही कारण है कि हमें सुसमाचार की, उसके अनुग्रह की आवश्यकता है। संस्कृति तो सिखाती है कि विवाह में बाधाएं आ रहीं हैं अर्थात आपकी इच्छा के अनुसार नहीं हो रहा है तो आप छोड़ दें। परन्तु सुसमाचार ऐसा नहीं कहता। वह कहता है, "यदि परिस्थिति असुविधाजनक हैं तो भी आप अपने पति से प्रेम करें।" अपने पति से प्रेम करें। अपने पति से प्रेम करें। पति से प्रेम करना आपकी प्राथमिकता है।

बाइबल आधारित नारीत्व का यही परिदृश्य है। यह ऐसा प्रेम है जिसमें संकल्प की वरन् महान संकल्प की आवश्यकता है। यह संकल्प मात्र ही नहीं प्रेम करने का व्यक्तिगत चुनाव है। यह वह प्रेम है जो महान आनन्द प्रदान करता है। यह महान आनन्द का कार्य है और तीतुस अध्याय 2 में परमेश्वर ने यही खाका तैयार किया है– प्रेम करने का आदेश। "अपने पति से प्रेम करो।" नये नियम में यह शब्द यूनानी भाषा का "फिलेओ" है। यह दो मित्रों के प्रेम को दर्शाता है। यह कोमलता एवं लगाव का प्रेम है जैसे दो घनिष्ठ मित्रों का प्रेम।

यह परिदृश्य परमेश्वर ने विवाहित जीवन के लिए तैयार किया है। यह स्वभाविक रूप से ही नहीं आता है यह ऐसा नहीं है कि आप सोचें, "यह मेरा अन्तिम अनुभव है।" आप सोच रहे होंगे, "मेरे पति के प्रति मुझमें भावनाएं तो रही नहीं। मैं तो किसी और से प्रेम करने लगी हूं। अब मैं क्या करुं?" क्या मैं इस शिक्षा का परित्याग करुं? नहीं, आप अपने पति से प्रेम करें। आपका प्रेम आपके पति क लिए ही है। यहां इसका अर्थ विकृत किए जाने की संभावना है। अतः इसे संपूर्ण धर्मशास्त्र की शिक्षा के साथ सामंजस्य में रखना है।

कुछ परिस्थितियां ऐसी होती हैं जिनके बारे में धर्मशास्त्र भी कहता है, उदाहरणार्थ मार–पीट करना। तीतुस अध्याय 2 यह नहीं सिखाता कि यदि आपका पति आपको मारता–पीटता रहे तो भी आप दिन–प्रतिदिन उससे प्रेम करते रहें। यह धर्मशास्त्र की शिक्षा नहीं है। आपको कष्ट दिया जाएगा परन्तु यहां स्पष्ट है कि अपने पति से संकल्प के साथ प्रेम करें, ऐसा प्रेम कि परमेश्वर कहता है, आपको परम आनन्द प्राप्त हो।

दूसरी आज्ञा, अपनी सन्तान से प्रेम करो। अपने बच्चों से प्रेम करो। यहां भी प्रेम करने का प्रशिक्षण है। बच्चों से भी सदैव प्रेम करना आसान नहीं है। यदि वे आपके पास ही बैठे हैं तो "आमीन" ज़ोर से नहीं बोलना! परिदृश्य यह है कि बच्चों से भी सदैव प्रेम करना आसान नहीं है। धर्मशास्त्र की ये बातें मेरे विचार

में अनुभव का प्रमाण हैं। ऐसा कोई काम नहीं है जिसमें मां के उत्तरदायित्वों से अधिक परिश्रम, तथा बलिदान हो–दिन–प्रतिदिन। पति गण, पिता गण, मैं आपको अवसर देना चाहता हूं कि आप "आमीन" कहें। मैं चाहता हूं कि आप इस अवसर का लाभ उठाएं। आज "मदर्स डे है।" अतः मैं आपको अवसर देना चाहता हूं कि आप जोश भरी प्रतिक्रिया दिखाएं।

दैनिक क्रियाकलाप में ऐसा कोई भी व्यवसाय नहीं है जिसमें मां के उत्तरदायित्वों से अधिक परिश्रम एवं बलिदान है। मैं आपकी सहायता करने का प्रयास कर रहा हूं। अपने बच्चों से प्रेम करो। इस प्रेम की मांग बहुत अधिक है। एक मां के लिए पुत्र या पुत्री की आत्मिक, शारीरिक, मानसिक सुधि लेना उन्हें जीवन के उतार–चढ़ाव से, घटती–बढ़ती से लेकर चलना आदि में निःसन्देह माताओं को बहुत कुछ करना पड़ता है।

यह एक अतुल्य परिदृश्य है और तीतुस अध्याय 2 कहता है कि कोई भी माता मां के उत्तरदायित्वों को पूरी तरह निभाने में सक्षम नहीं होती है। आप नहीं कर सकते। सुसमाचार यही दर्शा रहा है। आप स्वयं नहीं कर सकते। यह आपमें व्याप्त परमेश्वर का अनुग्रह है कि आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मां हों। सब कुछ अनुग्रह पर आधारित है। इसकी मांग इतनी अधिक है कि आपको परमेश्वर के पास जाना होता है कि कहें, "हे परमेश्वर, मुझे तेरी आवश्यकता है। हे मसीह यीशु कृपया, सहायता कर।"

इसमें केवल मांग ही नहीं है यह परम आनन्द उत्पन्न करता है। मैं इसे इसलिए दोहरा रहा हूं कि यह वही शब्द हैः कोमलता का अनुरागपूर्ण प्रेम जो घनिष्ठ मित्रों के बीच होता है। अब ज़रा सोचें। अविश्वासी संसार जब एक मां को अपने बच्चों से ऐसा प्रेम करते देखता है जैसा वह अपनी किसी घनिष्ठ सहेली से करती है तो क्या कहता है? यह हमारी संस्कृति में चमकता है, इतना अधिक कि मसीह का सौंदर्य दिखाई देता है। इससे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के बारे में शिक्षाएं इस खोए हुए संसार के लिए आकर्षण का कारण बन जाती हैं।

अपनी सन्तान से प्रेम करो। इसके बाद, अपने आप को अनुशासित करो। "चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें, और संयमी... हों।" यह संयम की बात तीतुस 2 में प्रत्येक वर्ग के लिए कही गई हैं। संयम की बात बार–बार आती है। यह यहां भी, तीतुस 2:5 में बच्चों के बाद ही तुरन्त आती है। यह समझदारी की बात ही है। यदि हम स्वयं ही अनुशासन में न हों तो अपनी सन्तान को कैसे अनुशासन सिखाएंगे? हम यह सोचेंगे भी कैसे?

लिखा है, संयमी हों और यही आत्म–अनुशासन का परिदृश्य पद 12 में भी है जहां हमने देखा कि परमेश्वर का अनुग्रह हमें चेतावनी देता है अर्थात हमारा प्रशिक्षण करता है। अनुग्रह हमें प्रशिक्षण प्रदान करता है। अतः यह ऐसा नहीं है कि आप अपनी क्षमता में कहें, "मैं मां के कारबार को कैसे अधिक कार्यकारी बना सकती हूं?" आपको वास्तव में कहना यह है, "हे परमेश्वर, मुझे आज और, प्रति पल तेरे अनुग्रह की आवश्यकता है कि मुझे सक्षम बनाए, मुझे प्रशिक्षण दे, मुझे अनुशासित करे, मुझे मसीह क स्वरूप में बदले, मुझे पवित्रता प्रदान करे।"–(पद 14)

अनुग्रह हमारे जीवन में यह कार्य करता है। अनुग्रह हमें संसार को "नहीं" और मसीह को "हां" कहने का अनुशासन प्रदान करता है। संसार की उन बातों को "नहीं" कहें जो संसार हमारे सामने, हमारे बच्चों के सामने, हमारे परिवार के सामने, हमारे पति के सामने रखता है और वे बाते हमें दूर ले जाती हैं। उन बातों को "नहीं" कहने का और हम में तथा हमारे लिए मसीह जो कुछ है उसके लिए "हां" कहने का अनुग्रह! यह अनुग्रह ही है जो इस काम को करता है।

मुझे नीतिवचन 25:28 अति मनभावन लगता है, "जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह घेराव करके तोड़ दी गई है।" ऐसी स्त्री जिसकी आत्मा वश में नहीं वह गिरी हुई शहरपनाह के नगर के समान है। यह एक अनुपम उदाहरण है। संयम वास्तव में हमारे प्राण के बैरी के सामने हमारी सुरक्षा दीवार है।

इनमें से प्रत्येक विषय पर हम अनेक उपदेशों का प्रचार कर सकते हैं। संपूर्ण धर्मशास्त्र नाना प्रकार से आत्मसंयम की शिक्षा देता है अर्थात आत्मा को वश में करने की शिक्षा! अनुग्रह हमें आत्मा वश में करने की चेतावनी देता है। भजनों में व्यक्त है कि यह जीवन का सोता है, देवियों, अपनी आत्मा वश में करो। अपना मन वश में करो। जो पवित्र है, जो कुलीन है, जो उचित है, जो अति उत्तम या प्रशंसनीय है उन बातों के विषय विचार करो। फिलिप्पियों 4 के अनुसार आपकी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है। अपनी देह की रक्षा करो। अपना खाना–पीना, सोना सब वश में रखो। अपनी देह वश में रखो। यह पवित्र आत्मा का मन्दिर है। संयमी हों, अपनी इच्छा को वश में रखें।

मैं आपको स्त्री–पुरुष दानों को, प्रोत्साहित करता हूं कि आप तीतुस 2 से सीखकर आत्मसंयम के इस विषय पर अपने जीवन में – उन क्षेत्रों पर ध्यान दें जो आपने असुरक्षित छोड़े हुए हैं– संभवतः जहां हमें संयम में विकास की आवश्यकता है। संभवतः वे अक्षम्य हैं।

मैं आपको प्रोत्साहित करता हूं, कि इस सप्ताह प्रभु के साथ अपने समय में आप उससे याचना करें कि वह एक या दो छोटे–छोटे क्षेत्र दिखाए जहां आपको संयम विकसित करने की आवश्यकता है और तब आप कहें, "मैं इसी पर ध्यान दूंगा और प्रभु मैं चाहता हूं कि तेरे अनुग्रह द्वारा, हे परमेश्वर, तू मेरे जीवन के इस क्षेत्र में संयम विकसित कर। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि जब आप इन क्षेत्रों पर, चाहे छोटे हों ध्यान देंगे तो देखेंगे कि छोटे क्षेत्र का प्रभाव अन्य सब क्षेत्रों पर कैसा पड़ता है।" अतः शनैः शनै अनावरण करें। संयमी बनें!

चौथी आज्ञाः परमेश्वर और अपने पति के विश्वासयोग्य बनें। संयमी और पवित्र बनें। यह विवाहित जीवन का, मन, मस्तिष्क और देह का परिदृश्य है। शुद्ध, अबोध, और अप्रदूषित! यह परमेश्वर और आपके पति के प्रति आमूल विश्वासयोग्यता है। यहां शुद्धता से अभिप्राय है शारीरिक पवित्रता।

यहां परिदृश्य विश्वासयोग्यता है। विश्वासयोग्य बनें। हम जानते हैं कि स्त्रियों के जीवन में, पुरुषों के जीवन में, विवाहित जीवनों में बैरी इसी क्षेत्र में वार करता है– नैतिक शुद्धता और परस्पर विश्वासयोग्यता पर वार करता है। हम जानते हैं कि व्यभिचार की परीक्षा न स्त्री देखती न पुरुष, न जवानी देखती है, न बुढ़ापा। चाहे विवाहित जीवन सुखी हो या दुःखी व्यभिचार की परीक्षा वास्तविक है। यही कारण है कि धर्मशास्त्र ऐसी कठोर चेतावनी देता है। हम में से एक भी ऐसा नहीं है जो अपनी शक्ति से इस पर जय पा ले।

अतः धर्मशास्त्र क्या कहता है? धर्मशास्त्र कहता है, "अनैतिकता से बचकर भाग!" बचकर निकल जा! देवियों– पुरुष भी परन्तु हमारा विषय नारीत्व है– यदि आप अनैतिकता से दूर होने का विचार कर रहे हैं तो भागना आरंभ कर दें। अनैतिकता से दूर भागें! मूल में इसका अर्थ है, उड़ जाओ– सुसमाचार, परमेश्वर का अनुग्रह आपको पंख प्रदान करता है। उस स्थान से ही निकल भागें। भाग निकलें! यह न सोचें कि आप मसीह के अनुग्रह के बिना उसका विरोध कर पाएंगे। मसीह का अनुग्रह ही आपको खींचकर दूर ले जाएगा– आमूल परित्याग द्वारा खींच कर अलग करेगा। उसके निकट भी न जाएं।

हम जानते हैं कि ये सब बातें परस्पर कैसे जुड़ी होती हैं। पति के लिए जब हमारा प्रेम कम होने लगता है तब हम और अधिक अरक्षित हो जोते हैं। हमें आत्म रक्षा करना आवश्यक है। अनैतिकता से भाग कर पवित्रता अपनाओ। पवित्रता अपनाओ– 2 तीमुथियुस 2:22, 1 कुरिन्थियों 6:18, अनिष्ठा से दूर भागें। अब

आप केवल अनैतिकता से भागते ही नहीं, वहां से भागकर किसी और स्थान में जाते हैं। आप अपने पति के पास आते हैं। आप शुद्धता में आते हैं। आप भागकर परमेश्वर रचित विवाह के क्षेत्र में आते हैं जिसे वह संपूर्ण धर्मशास्त्र में प्रकट करता है। इस विषय में आपके पास श्रेष्ठगीत की संपूर्ण पुस्तक है जो सुलैमान ने लिखी। उसने विवाह की स्थापना ही इसलिए की कि पति–पत्नी को दैहिक एकता और आनन्द में लज्जा न आए। परिदृश्य यह है। पवित्रता को अपनाएं। यदि आपको अनुबोधन की आवश्यकता है तो सप्ताहान्त श्रेष्ठगीत पढ़ें। अतः परिदृश्य यह है कि हमें विवाह में अपने जीवन के इस क्षेत्र को सुरक्षित करना है। अनैतिकता से भागें और पवित्रता अपनाएं! परमेश्वर के अनुग्रह से, परमेश्वर और अपने पति के विश्वासयोग्य ठहरें।

और तीन आज्ञाएं। हम इन्हें शीघ्रता से देखेंगे। नहीं कर पाएंगे क्योंकि यह आज्ञा कठिन है, "घर का कारबार करनेवाली।" आप सोच रहे होंगे, मैं प्रतीक्षा ही कर रही थी कि आप इस विषय पर आएं। संयमी, पतिव्रता, घर की कारबार करनेवाली। मैं जानता हूं कि इस वाक्यांश का उच्चारण करते ही लाल झड़ियां दिखाई देने लगेंगे। "आपके कहने का अर्थ क्या है, घर का कारबार करनेवाली?" धर्मशास्त्र द्वारा यह कहने का अभिप्राय क्या है?

घर का ध्यान रखना– यही इसका अर्थ है। 1 तीमुथियुस 5:14 में लिखा है, कि स्त्रियां अपना घर–बार संभालें। उन्हें अपना घरबार संभालना चाहिए। यहां परिदृश्य यह है कि बाइबल पर आचरण करनेवाली स्त्रियों को परमेश्वर ने एक उत्तरदायित्व दिया है, एक काम करने को दिया है। यह उत्तरदायित्व क्या है? आपका उत्तरदायित्व यह है कि परमेश्वर केन्द्रित परिवार बनाएं जो हमारे उद्धारकर्ता, हमारे परमेश्वर के बारे में दी जाने वाली शिक्षाओं को आकर्षित बनाएं जिससे कि हमारे विरोधियों को कुछ कहने का अवसर न मिले। हम पर दोष लगाने के लिए उनके पास कोई कारण न हो। उन्हें परमेश्वर के वचन की निन्दा करने का अवसर न मिले।

आपको परमेश्वर की ओर से यह उत्तरदायित्व दिया गया है कि आप अपने परिवार को परमेश्वर केन्द्रित बनाएं। अब यहां हम देखते हैं कि तीतुस अध्याय 2 में पत्नी को, माता को वरन् प्रत्येक स्त्री को घरबार संभालने की बात की जा रही है। यह उत्तरदायित्व नाना प्रकार से निभाया जा सकता है। नीतिवचन 31 देखिए जो इसका एक अति उत्तम उदाहरण है। यहां एक स्त्री सब काम करती दर्शाई गई है परन्तु यह मुख्य रूप से उसका परिवार के प्रति अपना उत्तरदायित्व है। परिवार में पुरुषों के उत्तरदायित्व की चर्चा हम आगे चलकर करेंगे।

धर्मशास्त्र के आधार पर हमें यह बोध होना है कि परिवार को संभालना धर्मशास्त्र की ऊंची वरन् श्रेष्ठ बुलाहट है। कलीसिया में इसकी पुष्टि की जाना आवश्यक है। ऊंची वरन् श्रेष्ठ बुलाहट! किसी लेखक ने लिखा, "अधिकांश संसार– अधिकांश संस्कृति यह मानते हैं कि गृहणी होना तब तक ही स्वीकार्य है जब तक कि आप अपने परिवार की देखभाल नहीं करती हैं। पुरुषों को ध्यानपूर्वक श्रद्धा अर्पित करना अच्छा है जब तक कि पुरुष कार्यालय में आपका बॉस हो, पति नहीं। बच्चों की सेवा प्रशंसनीय है जिसके लिए राष्ट्रपति पुरूस्कार दिया जाए परन्तु तब तक ही जब तक कि बच्चे आपके अपने न हों, किसी और के हों।"

परन्तु परमेश्वर का परिदृश्य यह है कि परिवार की सेवा करना उचित है, बच्चों के पालन–पोषण में अपना जीवन लगा दें। यह काम करना उचित है। यह उत्तरदायित्व परमेश्वर ने स्त्रियों को दिया है कि वे परमेश्वर केन्द्रित परिवार बनाएं और उसकी सेवा करें। अब परिस्थितियां अलग–अलग होती हैं। हर एक स्त्री पूरा समय घर में तो रहती नहीं है। कुछ माताएं नौकरी करती हैं, कहीं कहीं माताएं अकेली ही परिवार चलाती हैं। यहीं तो परमेश्वर का अनुग्रह आपको सक्षम बनाता है कि आप कहने योग्य हों कि यह आपके जीवन में कैसा प्रतीत होता है। मैं प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वर अपना वचन आपकी परिस्थिति में ही आपके जीवन में व्यावहारिक बनाए।

अब यदि हम देखें, कि आप करती क्या हैं? यहां यह समझना आवश्यक है कि पूरा समय घर में रहने का अर्थ यह नहीं कि आप तीतुस अध्याय 2 के अनुसार सराहनीय हैं। आप घर में रहकर पूरा समय टी.वी. देखने में बिता सकती हैं। इंटरनेट पर बिता सकती हैं। इस प्रकार आप तीतुस अध्याय 2 के निकट कहीं खरी नहीं उतरती हैं। तीतुस 2 का परिदृश्य यह है कि परमेश्वर द्वारा दिए गए उत्तरदायित्व को निभाना। यह अलग–अलग परिस्थितियों में अलग–अलग होगा। अतः मैं आपको प्रोत्साहित करता हूं कि यदि आप नौकरी करती हैं, यदि आप अकेली ही घर चला रही हैं तो आपके जीवन में इसके प्रदर्शन के लिए परमेश्वर का अनुग्रह उपलब्ध है। परन्तु मुख्य बात अन्ततः यही है कि हमें परमेश्वर प्रदत्त उत्तरदायित्व निभाना है–परमेश्वर केन्द्रित परिवार तैयार करना।

अब अगली आज्ञा है, भली हो, अर्थात उत्तेजित होने वाली न हो, दयालु हो। घर में व्यस्त रहती हो। अपने सब कामों में दयालु हो। हम ईमानदारी से कहें, कई बार बच्चे कृतघ्न होते हैं, पति कृतघ्न होते हैं। ऐसी स्थिति में तीतुस अध्याय 2 स्त्री से अपेक्षा करता है कि वह उत्तेजित न हो परन्तु दयालु या भली बनी रहे। इसका क्या अर्थ है कि वह भली हो? इसका अर्थ हैः पहला, अन्यों की जो उसके परिवार को देखते हैं,

उनकी भलाई की कामना करे–पति की भलाई की, बच्चों की भलाई की, बाहरी मनुष्यों की भलाई की कामना। अन्यों की भलाई की कामना करे और उनकी भलाई के काम करे।

तीमुथियुस की पहली पत्री में इस विषय व्यापक चर्चा की गई है– 1 तीमुथियुस 2:9, 10; 5:9 आदि। उस स्त्री की चर्चा करते हैं जो भले कामों की पुतली है। उसकी पहचान ही उसकी दया से है। यह एक अतुल्य परिदृश्य है– दयाभाव से सेवा करना।

अन्त में सुसमाचार एक युवा स्त्री पर क्या प्रभाव डालता है? "अपने पति के अधीन रहनेवाली हो।" अब मैं कुछ निर्दयी प्रतीत होऊंगा। अभी हम यहां रुकते हैं। उस पर विचार करने के लिए हमें अगले अध्ययन की आवश्यकता है।

अब जो मैं करना चाहता हूं वह यह है, हमने सुसमाचार के परिदृश्य को देखा और युवा स्त्री तथा वृद्ध स्त्री के बारे में चर्चा की। हम सदा ही सब जातियों में चेले बनाने के महान दूतकार्य को पूरा करने की बात करते रहते हैं यह कैसे होता है? वस्तुस्थिति यह है, माताएं, पत्नियां या अन्य स्त्रियां जो तीतुस अध्याय 2 के गुण प्रकट करती है, उसे मानती हैं, उस पर चलती हैं। मैं माताओं को, पत्नियों, स्त्रियों को चिताता हूं कि परमेश्वर ने आपको बेजोड़ बनाया है और आपको वरदानों से सम्पन्न किया है और आपका दैनिक कार्य मसीह की महिमा के निमित्त सब जातियों पर प्रभाव डालता है।

हमें स्त्रियों के लिए प्रार्थना करना है।